जीवाणु खाद के व्यवहार से लाभ :

- यह पूर्ण रूप से जैविक खाद है जिसका कोई गलत प्रभाव किसी भी जीवधारी पर नहीं पड़ता है।
- इस खाद के व्यवहार से फसल को हर तरह से लाभ होता है।
- फसल में बाहरी नाइट्रोजन की आपूर्ति 30 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
- फसल की वानस्पतिक एवं प्रजनन अवस्था समान रूप से चलती है।
- इसका प्रभाव धीरे–धीरे फसल पर होता है और बहुत अधिक समय तक बना रहता है।
- कृषि उत्पाद की गुणवत्ता काफी बढ़ जाती है।
- फसल की उत्पादन लागत घट जाती है और उत्पादन बढ़ जाता है।

जीवाणु खाद के व्यवहार के समय क्या न करें?

- जीवाणु खाद को गरम पानी अथवा गरम मांड़ में न डालें।
- जीवाणु खाद को सीधे धूप में न रखें।
- जीवाणु खाद का व्यवहार हमेशा सुबह–शाम में करें।
- बीज उपचार अथवा बिचड़ा उपचार के 4–6 घंटे के बाद इसका व्यवहार करने से पूरा लाभ नहीं मिलता है।
- रासायनिक उर्वरक के साथ मिला कर इसका व्यवहार कदापि न करें।

विशेष जानकारी के लिए कहाँ संपर्क करें?

- जिला स्तर पर जिला कृषि पदाधिकारी अथवा परियोजना निदेश आत्मा से संपर्क करें।
- प्रखंड स्तर पर प्रखंड कृषि पदाधिकारी अथवा प्रखंड विकास पदाधिकारी से संपर्क करें।
- पंचायत स्तर पर कृषि समन्वयक अथवा अपने गाँव के कृषक सलाहकार से संपर्क किया जा सकता है।
- निकट के कृषि विश्वविद्यालय/कृषि महाविद्यालय/कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विशेषज्ञ से उचित सलाह प्राप्त की जा सकती है।
- किसान कॉल सेन्टर के विशेषज्ञ से निःशुल्क सलाह के लिये 1800 180 1551 पर फोन करके भी सलाह प्राप्त की जा सकती है। यह सुविधा निःशुल्क है।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprintersjp@gmail.com

श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

जीवाणु खाद से सर्वोत्तम उत्पाद

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना – 800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

जीवाणु खाद से सर्वोत्तम उत्पाद

जीवाणु खाद क्या है?

- यह एक प्रकार की प्राकृतिक खाद है।
- यह खाद सूक्ष्म जीवाणुओं से बनती है जो फसल एवं पर्यावरण के मित्र होते हैं।
- इस खाद को विभिन्न प्रकार के जैविक पदार्थ (माध्यम) में मिलाकर बनाया जाता है।
- यह धरती की सबसे सस्ती खाद है।

जीवाणु खाद कैसे काम करती है?

- जीवाणु खाद मुख्यतः दो प्रकार की होती है।
- एक प्रकार की जीवाणु खाद वायुमंडल में उपलब्ध नेत्रजन का स्थिरीकरण (संग्रह) करके फसल को उपलब्ध कराता है।
- दूसरे प्रकार की जीवाणु खाद मिट्टी में उपलब्ध अघुलनशील अर्थात फसलों को अप्राप्त फास्फोरस को घुलनशील बनाकर फसल को उपलब्ध कराती है।

फसल विशेष के लिये जीवाणु खाद।

- फसल के साथ वायुमंडलीय नेत्रजन संग्रह करने वाली जीवाणु खाद बदलती रहती है।
- परन्तु अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने वाली जीवाणु खाद सभी फसलों पर समान रूप से काम करती है।
- धान की फसल के लिये एजोस्फीरिलियम नामक जीवाणु खाद का व्यवहार किया जाना चाहिए।

- गेहूँ, मक्का, तेलहन, सब्जी, गन्ना आदि फसलों के लिये एजोरोबैक्टर नामक जीवाणु खाद का व्यवहार करना चाहिये।
- दलहनी फसलों के लिये भिन्न–भिन्न प्रकार की जीवाणु खाद का व्यवहार किया जाता है। जिसे राजोबियम जीवाणु खाद कहते हैं।

जीवाणु खाद का व्यवहार कैसे करें?

- जीवाणु खाद से बीज का उपचार करके उसका व्यवहार किया जा सकता है।
- दो सौ ग्राम (200 ग्राम) जीवाणु खाद 10–12 किलो बीज का उपचार करने के लिये पर्याप्त होता है।
- 200 ग्राम जीवाणु खाद को आधा लीटर ठण्ढे माड़ अथवा गुड़ के घोल में मिलाकर बीज के ऊपर डालकर बीज और जीवाणु खाद के घोल को अच्छी तरह से मिला दें ताकि प्रत्येक बीज पर घोल की एक हल्की परत चढ़ जाये।
- जीवाणु खाद से उपचारित बीज को आधा घंटा छाया में सुखाकर व्यवहार करें।
- बिचड़े का उपचार करके भी जीवाणु खाद का व्यवहार किया जा सकता है।
- किसी भी प्रकार के जीवाणु खाद की एक किलोग्राम मात्रा में 5–10 लीटर पानी मिलाकर घोल बना लें। यह घोल एक एकड़ खेत में लगने वाले बिचड़े (विशेष रूप से सब्जी के बिचड़े) के लिये पर्याप्त होता है।
- जीवाणु खाद के घोल में बिचड़े की जड़ को कम–से–कम आधा घंटा डुबोकर रखें, फिर उसे खेत में रोप दें।
- जीवाणु खाद से मिट्टी का भी उपचार कर सकते हैं।
- एक एकड़ खेत के लिये जीवाणु खाद की 2–5 किलो ग्राम मात्रा को 50–60 किलो बारीक सूखी भुरभुरी मिट्टी में मिला लें। फसल की बुवाई अथवा रोपाई के 24 घंटे पूर्व अथवा बुवाई/रोपाई के समय मिट्टी में व्यवहार किया जा सकता है।